SEM-V
MJC-8

Sociology

Topic :- निर्धनता के सामाजिक दुष्परिणाम

निर्धनता समाज की एक गंभीर सामाजिक आर्थिक समस्या है। जब व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं- भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य की पूर्ती नहीं कर पाता, तब उसे निर्धनता कहते हैं। निर्धनता केवल आर्थिक कमी ही नहीं बल्कि सामाजिक असुरक्षा, मानसिक तनाव और सामाजिक समस्याओं को भी जन्म देती है।

निर्धनता के समाज पर अनेक दुष्परिणाम हैं।-

बाल अपराध और अपराध की वृद्धि- निर्धनता के कारण परिवार में माता-पिता दोनों को अर्थोपार्जन के लिए घर के बाहर काफी समय व्यतीत करना पड़ता है और बच्चों पर उनका नियंत्रण ढीला पड़ जाता है और वे चोरी, लूट, नशाखोरी इत्यादि अपराधों में लिप्त हो जाते हैं। इसके अलावा समाज के वयस्क सदस्य भी ईमानदारी से जिविकोपार्जन करते हुए असफल हो जाने पर अपराध के रास्तों पर बढ़ जाते हैं। चोरी, लूट, धोखाधड़ी जैसे अपराधों में वृद्धि का एक कारण आर्थिक अभाव भी है।

आत्महत्या - जब व्यक्ति आर्थिक संकट से अत्यधिक परेशान हो जाता है, और परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता, तब वह निराशा और मानसिक तनाव से घिर जाता है ऐसी परिस्थिती में कुछ लोग आत्महत्या जैसे कठोर कदम भी उठा लेते हैं।

विवाह-विच्छेद और पारिवारिक तनाव -

आर्थिक समस्याएँ परिवार में झगड़े और असंतोष के कारण हैं। बेरोजगारी या आय की कमी के कारण पति-पत्नि के बीच तनाव उत्पन्न होता है, जिससे पारिवारिक संबन्ध कमजोर होते हैं और कभी-कभी विवाह-विच्छेद तक की स्थिती भी बन जाती है।

बेरोजगारी - निर्धनता और बेरोजगारी एक-दूसरे से जुड़ी समस्याएँ हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण व्यक्ति शिक्षा या कौशल प्राप्त नहीं कर पाता, जिससे रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं। इससे निर्धनता और अधिक बढ़ती है।

भिक्षावृत्ति - जब व्यक्ति के पास जीविका का कोई साधन नहीं बचता, तब वह भिक्षा मांगने के लिए विवश हो जाता है। यह समाज की गरिमा को भी प्रभावित करता है और समाज में असमानता को दर्शाता है।

6. वेश्यावृत्ति - कई बार अत्यधिक गरीबी और आर्थिक विपन्नता की वजह से कुछ महिलाएँ और लड़कियाँ जीवन-यापन के लिए वेश्यावृत्ति की ओर धकेली जाती हैं। यह निर्धनता का एक गंभीर सामाजिक दुष्परिणाम माना जाता है।

* निर्धनता और अपर्याप्त पोषण या कुपोषण का संबन्ध बहुत घनिष्ठ है। गरीब व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य पेट भरना होता है, इसलिए वह पौष्टिक भोजन जैसे-दूध, फल, घी इत्यादि का पर्याप्त सेवन नहीं कर पाता।
* शरीर को आवश्यक कैलोरी और पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाते
* बच्चों और महिलाओं, मजदूर वर्ग में कुपोषण की समस्या अधिक देखी जाती है।
* कुपोषण के कारण स्वास्थ्य कमजोर होता है और कार्यक्षमता कम हो जाती है।
* इससे बीमारी, कमजोरी और मृत्युदर में वृद्धि हो सकती है।
* कुपोषण और निर्धनता एक दुष्चक्र (vicious cycle) बनाते हैं- गरीबी से कुपोषण और कुपोषण से कम कार्यक्षमता, जिससे फिर गरीबी बढ़ती है।

अतः स्पष्ट है कि निर्धनता केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, पारिवारिक, और स्वास्थ्य संबन्धी कई समस्याओं को जन्म देती है। अपराध, बेरोजगारी, भिक्षावृत्ति और कुपोषण जैसी समस्याएँ इसके परिणाम होते हैं।

Scanned with CamScanner